मार्च-अप्रैल, मई-जून 2022
मूल्य : 100 रुपये

ISSN : 2320–1274

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

वेब अंक
www.notnul.com

वेब अंक
www.notnul.co

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

वर्ष 17, अंक 97-98, **मार्च-अप्रैल, मई-जून, 2022**

रेखांकन:
सुषमा सिन्हा

संपादक
शंकर

संपादक-मंडल
डॉ. अब्दुल बिस्मिल्लाह
हरियश राय
महेश दर्पण
संजय कुंदन

संयुक्त संपादक
अरविंद कुमार सिंह

संपादन-सहयोगी
अजय मेहताब
रवि कुमार
दीपक कुमार गोंड
अजय राय

कला : जयंत
कानूनी सलाह : उत्कर्ष

क्षेत्रीय समन्वयक
अवधेश द्विवेदी
09956535008
09430112417

सम्पादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय
परिकथा, 96, बेसमेंट, फेज-III, इरोज गार्डन
सूरजकुंड रोड, नई दिल्ली-110044

दूरभाष
सम्पादकीय/ व्यवस्थापकीय 09431336275
08826011824
कार्यालय (0129) 4116726
09555670600

email : parikatha.hindi@gmail.com

संपादकीय
युद्धभूमि का नेपथ्य — 3

विशिष्ट लेख
नवजागरण के आंदोलन और संरक्षणवाद — *डॉ. शंभुनाथ* — 5

लेख
सामाजिक बदलाव के पचहत्तर वर्ष — *डॉ. व्रजकुमार पांडेय* — 14

प्रसंग
भारत : एक देश बारह दुनिया — *डॉ. कुमारी उर्वशी* — 20

संस्मरण
एक बेचैन आत्मा : अली जावेद — *विभूति नारायण राय* — 25

लेख
अल्पसंख्यक अस्मिता का प्रश्न : साहित्य से गुजरते हुए — *अरुण कुमार* — 27

प्रसंग
'कर्बला दर कर्बला' : शर्म तुमको मगर नहीं आती — *प्रो. कमलानंद झा* — 42

प्रसंग
शून्य-बोध — *अशोक शाह* — 48

परिचर्चा
कथा-आलोचना का वर्तमान परिदृश्य — *जानकीप्रसाद शर्मा • जवरीमल्ल पारख • रामधारी सिंह दिवाकर • अरविंद कुमार • सूर्यनाथ सिंह • अरुण होता • गौरीनाथ • नर्मदेश्वर • सूरेश कांटक • महेश दर्पण • विजय शर्मा • हरियश राय* — 52

पत्रिका
इस मुहब्बत के बदले में क्या नज़्र दें — *डॉ. एस.के. साबिरा* — 74

प्रसंग
इतिहास का अन्वेषण और साहित्यरस का आस्वाद — *डॉ. नितिन सेठी* — 78

संवाद
नये साल पर कुछ कहानियाँ — *रमाकांत श्रीवास्तव* — 87
नये साल की कहानियाँ : कुछ नोट्स — *डॉ. मृत्युंजय सिंह* — 93

चौपाल

लोकार्पण — *नर्मदेश्वर* 97

देशांतर

(पाकिस्तानी कहानी)

गलियारा — *तौकीर चुगताई*
अनु.: *नीलम शर्मा 'अंशु'* 101

कहानियाँ

ए देश बता, तुझे हुआ क्या है? — *उर्मिला शिरीष* 104
नई सदी की दंतकथा — *राजेन्द्र लहरिया* 117
नदी — *शैलेन्द्र अस्थाना* 123
अपने ही देश में — *दिलीप अर्श* 126
धूप में पौधा — *जनार्दन* 131
खेवनहार — *गोविन्द सेन* 141
रौंदे हुए फूल — *मार्टिन जॉन* 144
पहाड़ पर टैंकर — नलित फुलारा 150

परिदृश्य

कहानी की गतिशीलता-2 — *तरसेम गुजराल* 154

कविताएँ

वह — *सुभाष राय* 166
कत्लगाह के बारे में — *सुधांशु कुमार मालवीय* 168
कुंद — *दिविक रमेश* 170
दीवार के पार — *खेमकरण 'सोमन'* 170
संस्कृतियाँ पलती हैं नदियों की गोद में — *प्रतिभा चौहान* 171
बुझा हुआ चूना — *खुदेजा खान* 173
इरोम शर्मिला — *रानी श्रीवास्तव* 174

कथायात्रा

जीवन के अनुभव ही कहानियों के पैमाने हैं — *हरियश राय* 175

फेसबुक

फेसबुक — *शहंशाह आलम* 182

किताबें

क्यों जरूरी है बोलना, खामोशी तोड़ना — *डॉ. स्मृति शुक्ल* 189
'पंथ निहारी निहारी' : स्त्री-सम्मान, स्वाभिमानि और संकल्प की गाथा — *डॉ. जी. राजू* 193

परिक्रमा 197

'परिकथा' के सदस्यों तक पत्रिका नहीं पहुँच पाने की शिकायतों के बीच यह निर्णय लिया है कि 'परिकथा' अब सामान्य डाक से नहीं सिर्फ रजिस्टर्ड डाक से भेजी जायेगी। सदस्यता शूल्क निम्नवत होगी :

चार अंकीय सदस्यता	400/-
डाक खर्च	200/-
आठ अंकीय सदस्यता	800/-
डाक खर्च	400/-

–सम्पादक

पत्रिका आजीवन निशुल्क पाने के लिए सौजन्य सदस्यता : 10,000 रुपये

सभी भुगतान चेक या ड्राफ्ट से या फिर सीधे 'परिकथा' एकाउंट में हो :

PARIKATHA
Aèkc No. : 50200010771980
Charmwood Village, Surajkund Road
Faridabad-121009
RTGS èk NEFT èk IFSC : HDFC 0000396

सलाहकार संपादक, संपादक, सहायक संपादक अवैतनिक, अव्यवसायिक रूप से मात्र साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म में सहयोगी।

रमाशंकर प्रसाद द्वारा परिकथा, 96, Ist फ्लोर, फेज III, इरोज गार्डन, सूरजकुंड रोड, नई दिल्ली-44 से प्रकाशित, यह अंक डॉलफिन प्रिन्टो ग्राफिक्स, 4-ई/7, पाबला बिलिंडग, झण्डेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110055 से मुद्रित।

'परिकथा' में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं।

आवरण : जयंत, नाला रोड, चर्च और मंदिर के बीच, न्यू एरिया, सासाराम-821115 (बिहार)
भीतरी रेखांकन : जयंत, मनीषा जैन और लोकेश
कम्पोज़िंग : **जोशी टाइपसेटर**, म.नं. 31, गली नं. 37-बी, कौशिक इन्क्लेव, बुराड़ी-110084 मो.: 9650463001

संपादकीय

युद्धभूमि का नेपथ्य

टेलीविजन चैनलों से इधर रूस-यूक्रेन युद्ध के जो कवरेज आये हैं, वे प्रायः युद्ध की विभीषिका की दृश्यात्मक प्रस्तुतियाँ हैं और इनका कुल प्रभाव युद्ध में शामिल दो देशों में से किसी के पक्ष में सहानुभूति और किसी के पक्ष में असहमति या आक्रोश उत्पन्न करने का ही रहा है।

किन्तु एक सच यह भी है कि इस युद्ध में दो ही देश नहीं हैं, इसकी नेपथ्य-भूमि में सैन्य संगठन नाटो का सर्वप्रमुख साम्राज्यवादी देश अमेरिका भी है। जो देश तबाहियाँ और बर्बादियाँ झेल रहा है, उसके लिए सहानुभूति स्वाभाविक है और जिस देश ने युद्ध शुरू किया है, उसके प्रति असहमति या आक्रोश भी स्वाभाविक है लेकिन जिस देश ने इस युद्ध की स्थितियाँ बनायी हैं और जो इस युद्ध से सबसे ज्यादा लाभान्वित होने की स्थिति में है, जब उसकी भूमिका को समझा जायेगा और युद्ध में शामिल सिर्फ दोनों ही देशों पर सोच को केंद्रित नहीं रखा जायेगा, इस युद्ध की वस्तुनिष्ठ और मुकम्मिल समझ तभी बनेगी।

यह सर्वज्ञात है कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद दुनिया में जो परिदृश्य बना था, उसमें अमेरिका ब्रिटेन को पीछे धकेलकर सबसे बड़े साम्राज्यवादी देश के रूप में सामने आया था। दूसरी तरफ सोवियत रूस इसके समानांतर समाजवादी मूल्यों पर आधारित सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के निर्माण में संलग्न सर्वप्रमुख साम्राज्यवाद-विरोधी शक्ति-केंद्र के रूप में मौजूद था। बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में सोवियत संघ के विघटन के बाद प्रमुख देश रूस को अमेरिका समर्थित सैन्य-संगठन नाटो से चुनौतियाँ मिलनी शुरू हो गयी थीं और तब से लेकर आज तक अपनी सीमाओं की सुरक्षा रूस के लिए एक प्रमुख चिंता बनी रही है।

यह भी सर्वविदित तथ्य है कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद दुनिया में जितने भी युद्ध हुए हैं, अमेरिका या तो उनमें खुद एक पक्ष रहा है या किसी पक्ष के पीछे खड़ा रहा है। अमेरिका दुनिया में हथियारों का सबसे बड़ा निर्माता है और दुनिया में युद्ध होते रहें तो यह अमेरिका के हथियार-व्यवसाय के लिए एक सुखद स्थिति होती है। कहने की जरूरत नहीं कि युद्ध अमेरिका के लिए एक व्यावसायिक अवसर है और बहुत स्वाभाविक है कि वह ऐसे अवसरों के सृजन से भी नहीं चूकता है। अनेक मामलों में उसने युद्ध की स्थितियाँ बनायी हैं।

रूस का इतिहास समाजवादी मूल्यों पर आधारित समाज-व्यवस्था के निर्माण में संलग्न देश का इतिहास है। साम्राज्यवाद या विस्तारवाद उसके एजेंडा में कभी कोई विषय नहीं रहा है, उसने युद्ध हमेशा साम्राज्यवाद से अपनी रक्षा के लिए किया है और एक बड़ी सैन्यशक्ति खड़ा करना इसके लिए उसकी एक जरूरत रही है।

हाल-फिलहाल के वर्षों में जब तक यूक्रेन एक तटस्थ देश रहा, रूस को कोई परेशानी नहीं हुई थी। यूक्रेन ने क्यों नाटो का सदस्य बनने की इच्छा पालनी शुरू कर दी, यह यूक्रेन और अमेरिका के बीच चल रही बातचीत का विषय है और इसे अमेरिका और यूक्रेन ही ठीक से समझ रहे होंगे। सोचा और कहा जा सकता है कि यह यूक्रेन की स्वतंत्रता है कि वह रूस के साथ रहे, तटस्थ रहे या नाटो में शामिल हो जाये। किन्तु यहाँ यह भी विचारणीय है आज की दुनिया में स्वतंत्रता सर्वसम्पूर्ण नहीं, बल्कि सापेक्ष होती है। आप अपने घर का पुनर्निर्माण करेंगे तो आप पर यह सोचने की जिम्मेवारी है कि आपके पड़ोसी को क्या मुश्किल या कितनी असुरक्षा पैदा हो रही है। ऐसा नहीं हो सकता कि आपके मन में जो आये, करें, पड़ोसी के हितों के बारे में न सोचें। अगर आप ऐसा करेंगे तो इसको लेकर पड़ोसी की जरूर कोई प्रतिक्रिया होगी। आपसे सवाल करने की, नहीं सुनने पर लड़ बैठने की या उस पुनर्निर्माण को रूकवाने के लिए कोई कार्रवाई करने की। रूस की कार्रवाई दरअसल वस्तुनिष्ठ परिप्रेक्ष्य में समझे जाने की माँग करती है।

रूस-यूक्रेन युद्ध में रूस को एक साम्राज्यवादी-विस्तारवादी सोच के देश के रूप में चिह्नित करने की कोशिशें हुई हैं। सच यह है कि रूस के पास साम्राज्यवाद या विस्तारवाद का कोई एजेंडा नहीं है,